

## **DAY-12**

### **मैं प्रभु की सेवा करता ही रहा।**

प्रेरितों के काम **20:18-25**

<sup>18</sup> जब वे उस के पास आए, तो उन से कहा, तुम जानते हो, कि पहिले ही दिन से जब मैं आसिया में पहुंचा, मैं हर समय तुम्हारे साथ किस प्रकार रहा।

<sup>19</sup> अर्थात् बड़ी दीनता से, और आंसू बहा बहाकर, और उन परीक्षाओं में जो यहूदियों के षडयन्त्र के कारण मुझ पर आ पड़ी; मैं प्रभु की सेवा करता ही रहा।

<sup>20</sup> और जो जो बातें तुम्हारे लाभ की थीं, उन को बताने और लोगों के साम्हने और घर घर सिखाने से कभी न झिझका।

<sup>21</sup> वरन यहूदियों और यूनानियों के साम्हने गवाही देता रहा, कि परमेश्वर की ओर मन फिराना, और हमारे प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास करना चाहिए।

<sup>22</sup> और अब देखो, मैं आत्मा में बन्धा हुआ यरूशलेम को जाता हूँ, और नहीं जानता, कि वहां मुझ पर क्या क्या बीतेगा

<sup>23</sup> केवल यह कि पवित्र आत्मा हर नगर में गवाही दे देकर मुझ से कहता है, कि बन्धन और क्लेश तेरे लिये तैयार हैं।

<sup>24</sup> परन्तु मैं अपने प्राण को कुछ नहीं समझता: कि उसे प्रिय जानूँ, वरन यह कि मैं अपनी दौड़ को, और उस सेवाकाई को पूरी करूँ, जो मैं ने परमेश्वर के अनुग्रह के सुसमाचार पर गवाही देने के लिये प्रभु यीशु से पाई है।

<sup>25</sup> और अब देखो, मैं जानता हूँ, कि तुम सब जिनमें मैं परमेश्वर के राज्य का प्रचार करता फिरा, मेरा मुंह फिर न देखोगे।

<sup>26</sup> इसलिये मैं आज के दिन तुम से गवाही देकर कहता हूँ, कि मैं सब के लोहू से निर्दोष हूँ।

<sup>27</sup> क्योंकि मैं परमेश्वर की सारी मनसा को तुम्हें पूरी रीति से बनाने से न झिझका।

<sup>28</sup> इसलिये अपनी और पूरे झुंड की चौकसी करो; जिस से पवित्र आत्मा ने तुम्हें अध्यक्ष ठहराया है; कि तुम परमेश्वर की कलीसिया की रखवाली करो, जिसे उस ने अपने लोहू से मोल लिया है।

<sup>29</sup> मैं जानता हूँ, कि मेरे जाने के बाद फाड़ने वाले भेड़िए तुम में आएंगे, जो झुंड को न छोड़ेंगे।

#### **1. बड़ी दीनता- सेवा करता ही रहा।**

<sup>19</sup> अर्थात् बड़ी दीनता से, और आंसू बहा बहाकर, और उन परीक्षाओं में जो यहूदियों के षडयन्त्र के कारण मुझ पर आ पड़ी; मैं प्रभु की सेवा करता ही रहा।

#### **2. आंसू बहा बहाकर- सेवा करता ही रहा।**

<sup>19</sup> अर्थात् बड़ी दीनता से, और आंसू बहा बहाकर, और उन परीक्षाओं में जो यहूदियों के षडयन्त्र के कारण मुझ पर आ पड़ी; मैं प्रभु की सेवा करता ही रहा।

#### **3. परीक्षाओं में - सेवा करता ही रहा।**

<sup>19</sup> अर्थात् बड़ी दीनता से, और आंसू बहा बहाकर, और उन परीक्षाओं में जो यहूदियों के षडयन्त्र के कारण मुझ पर आ पड़ी; मैं प्रभु की सेवा करता ही रहा।

#### **4. षडयन्त्र - सेवा करता ही रहा।**

<sup>19</sup> अर्थात् बड़ी दीनता से, और आंसू बहा बहाकर, और उन परीक्षाओं में जो यहूदियों के षडयन्त्र के कारण मुझ पर आ पड़ी; मैं प्रभु की सेवा करता ही रहा।

#### **5. लाभ की बातें समजाहीं**

<sup>20</sup> और जो जो बातें तुम्हारे लाभ की थीं, उन को बताने और लोगों के साम्हने और घर घर सिखाने से कभी न झिझका।

**6. घर घर सिखाने से कभी न झिझका**

<sup>20</sup> और जो जो बातें तुम्हारे लाभ की थीं, उन को बताने और लोगों के साम्हने और घर घर सिखाने से कभी न झिझका।

**7. यहूदियों और यूनानियों के साम्हने गवाही देता रहा**

<sup>21</sup> वरन यहूदियों और यूनानियों के साम्हने गवाही देता रहा, कि परमेश्वर की ओर मन फिराना, और हमारे प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास करना चाहिए।

**8. आत्मा में बन्धा हुआ यरूशलेम को जाता हूँ, और नहीं जानता, कि वहाँ मुझ पर क्या क्या बीतेगा**

<sup>22</sup> और अब देखो, मैं आत्मा में बन्धा हुआ यरूशलेम को जाता हूँ, और नहीं जानता, कि वहाँ मुझ पर क्या क्या बीतेगा

**9. पवित्र आत्मा हर नगर में गवाही दे देकर मुझ से कहता है, कि बन्धन और क्लेश तेरे लिये तैयार हैं।**

<sup>23</sup> केवल यह कि पवित्र आत्मा हर नगर में गवाही दे देकर मुझ से कहता है, कि बन्धन और क्लेश तेरे लिये तैयार हैं।

**10. परन्तु मैं अपने प्राण को कुछ नहीं समझता:**

<sup>24</sup> परन्तु मैं अपने प्राण को कुछ नहीं समझता: कि उसे प्रिय जानूँ, वरन यह कि मैं अपनी दौड़ को, और उस सेवाकाई को पूरी करूँ, जो मैं ने परमेश्वर के अनुग्रह के सुसमाचार पर गवाही देने के लिये प्रभु यीशु से पाई है।

**11. मेरा मुंह फिर न देखोगे।**

<sup>25</sup> और अब देखो, मैं जानता हूँ, कि तुम सब जिनमें मैं परमेश्वर के राज्य का प्रचार करता फिरा, मेरा मुंह फिर न देखोगे।

**12. मैं सब के लोहू से निर्दोष हूँ।**

<sup>26</sup> इसलिये मैं आज के दिन तुम से गवाही देकर कहता हूँ, कि मैं सब के लोहू से निर्दोष हूँ।

**13. परमेश्वर की सारी मनसा को तुम्हें पूरी रीति से बनाने से न झिझका।**

<sup>27</sup> क्योंकि मैं परमेश्वर की सारी मनसा को तुम्हें पूरी रीति से बनाने से न झिझका।

<sup>28</sup> इसलिये अपनी और पूरे झुंड की चौकसी करो; जिस से पवित्र आत्मा ने तुम्हें अध्यक्ष ठहराया है; कि तुम परमेश्वर की कलीसिया की रखवाली करो, जिसे उस ने अपने लोहू से मोल लिया है।

<sup>29</sup> मैं जानता हूँ, कि मेरे जाने के बाद फाड़ने वाले भेड़िए तुम में आएंगे, जो झुंड को न छोड़ेंगे।